P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL. -5, ISSUE-3, February-2017
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

व्यक्तित्व विकास के सन्दर्भ में किशोरों की आवश्यकताओं का अध्ययन

मोनिका सरोज
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
बी0 एड0 विभाग,
काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर,
भदोही, उ0 प्र0

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य किशोर विद्यार्थियों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं का अध्ययन करना है। इस अध्ययन हेतु गुच्छ न्यादर्श विधि द्वारा उत्तर प्रदेश राज्य के इलाहाबाद, लखनऊ, कानपुर, आगरा तथा वाराणसी शहर से माध्यमिक स्तर के 304 किशोर विद्यार्थियों का चयन किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में आर. आर. त्रिपाठी (1979) द्वारा निर्मित व्यक्तित्व आवश्यकता अनुसूची का प्रयोग किया गया है। एकत्रित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक–विचलन व टी–अनुपात प्रविधि का प्रयोग किया गया। अध्ययन से प्राप्त परिणाम इस प्रकार हैं– 1. किशोर विद्यार्थियों में सम्प्राप्ति, सानिध्य व परोपकार की मांग सबसे अधिक प्रबल पाई गई जबकि आक्रामकता, वैभिन्नता व स्वायत्ता की मांग सबसे कम प्रबल पाई गई। 2. किशोर छात्रों में सम्प्राप्ति, सानिध्य व व्यवस्था की मांग सबसे अधिक प्रबल पाई गई जबकि वैभिन्नता, सहनशीलता, आक्रामकता व आत्महीनता की मांग सबसे कम प्रबल पाई गई। 3. किशोर छात्राओं में परोपकार, स्वीकृति, सानिध्य व सम्प्राप्ति की मांग सबसे अधिक प्रबल पाई गई जबकि आक्रामकता, स्वायत्ता व वैभिन्नता की मांग सबसे कम प्रबल पाई गई। 4. किशोर छात्रों एवं छात्राओं की व्यक्तित्व आवश्यकतों में सम्प्राप्ति, स्वीकृति, स्वायत्तता, सानिध्य, प्रभुत्व, आत्महीनता, परोपकार, परिवर्तन, सहनशीलता तथा आक्रामकता की मांग में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया जबकि व्यवस्था, प्रदर्शन, परिहार, पराश्रय तथा वैभिन्नता की मांग में सार्थक अन्तर पाया गया।

मुख्य शब्दःव्यक्तित्व आवश्यकता

प्रस्तावना

व्यक्तित्व की संकल्पना में मानव आवश्यकताओं का महत्वपूर्ण स्थान है। समय–समय पर अनेक विचारकों ने इस पर अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। फ्रुड (1939) द्वारा मानव व्यवहार के लिए अचेतन प्रक्रिया को उत्तरदायी माना गया है। वहीं मॉसलो (1954) ने मानव आवश्यकता की सबसे प्रसिद्ध संकल्पना 'क्रमिक माँग का सिद्धान्त' दिया है। इनके अनुसार व्यक्ति का व्यवहार उसकी क्रमिक माँगों द्वारा संगठित होता है। माँगों के इस पदानुक्रमिक निदर्श में कोई माँग जितनी नीचे स्थित है उसकी प्राथमिकता उतनी ही अधिक स्वीकार की गयी है एवं निचले स्तर की माँग को पूर्णतः या अंशतः पूरा होने पर ही उससे ऊपर स्थित माँग क्रियाशील होती है। वहीं मानवतावादी मनोवैज्ञानिक मुर्रे (1938) ने व्यक्ति की आन्तरिक माँगों के आधार पर व्यक्तित्व को स्पष्ट किया। फ्रैन्कल (1984) ने इन माँगों को बौद्धिक कहा है।

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा आवश्यकता को परिभाषित किया गया है। कैमिरॉन (1947) के अनुसार ''आवश्यकता किसी प्राणी के व्यवहार की वह अव्यस्था या असन्तुलन की स्थिति होती है जिसमें वह बढ़े हुये तनाव से बचाव की क्रिया करता है''। मैक किनॉन (1948) के अनुसार ''आवश्यकता किसी जीव में तनाव की वह अवस्था या स्थिति होती है जो उसे निश्चित अभिप्रेरणों या लक्ष्यों की ओर अभिप्रेरित करती है''। गोल्डस्टिन (1939) ने आवश्यकता को स्व–वास्तवीकरण सिद्धान्त के स्पष्टीकरण के रूप में परिभाषित किया है।

मॉसलो तथा मुर्रे ने व्यक्तित्व माँगों के सम्बन्ध में विशेष कार्य किया है। मॉसलो (1954) ने मानव मूल्यों, वैयक्तिक वर्धन तथा आत्म–निर्देश पर बल देते हुये कहा कि व्यक्तित्व का विकास व्यक्ति के अन्दर उपस्थित अभिप्रेरकों द्वारा संगठित ढंग से होता है। उनके सिद्धान्त में अभिप्रेरणात्मक प्रक्रियाएं व्यक्तित्व के निर्धारण में प्रमुख भूमिका निभाती है। मॉसलो का विचार था कि मानव अभिप्रेरक जन्मजात होते हैं एवं इन्हें वरीयता के आधार पर आरोही पदानुक्रम के रूप में व्यवस्थित किया जा सकता है। मुर्रे (1938) ने व्यक्तित्व

की व्याख्या व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक माँगों के आधार पर की है। उनके अनुसार वातावरण दबाव के कारण व्यक्ति के भीतर एक विशिष्ट प्रकार की इच्छा, आवश्यकता तथा माँग उत्पन्न हो जाती है जो व्यक्ति को एक विशिष्ट दिशा में व्यवहार करने को विवश करती है। व्यक्ति के बाह्य पर्यावरण का वह दबाव विभिन्न प्रकार का होता है। कालान्तर में प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व में ऐसी बहुत सी विशिष्ट माँगें विकसित एवं स्थायी हो जाती है जो उसके व्यवहार को दिशा प्रदान करती हैं तथा जिसके आधार पर उसके व्यक्तित्व को समझने में सहायता मिलती है। मुर्रे के मतानुसार व्यक्तित्व की ये आवश्यकताएं ही व्यक्तित्व की वे विशेषताएं हैं जो उसके व्यवहार को नियन्त्रित एवं प्रचलित करती हैं। मुर्रे ने इस प्रकार की लगभग 40 माँगें ज्ञात की तथा उन्हें 'व्यक्तित्व माँग' का नाम दिया। शॉ (2007) ने चार मुख्य आवश्यकताओं की पहचान की है– सामान्यीकृत, तुलनात्मक, एहसास करना और प्रदर्शन। वहीं प्रिंगल (1974) ने इन आवश्यकताओं को प्रेम और सुरक्षा, नवीन अनुभव, प्रशंसा व पहचान और जिम्मेदारी के रूप में पहचाना है।

व्यक्तित्व आवश्यकता से सम्बन्धित अनेक शोध अध्ययन हुए है। गैरहॉक (1973) ने अनाथ बच्चों की, नकवी (1982) ने ईरानी विद्यार्थियों की, मो0 शाहजहॉ ने बांग्लादेशी विद्यार्थियों की, पाटिल ने (1982) बौद्धिक रुप से बुद्धिमान बच्चों की जबकि कुमार (1985) ने प्रतिभाशाली बच्चों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं का अध्ययन किया। वहीं विद्यार्थियों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं का छात्र शैक्षिक सन्तुष्टि के सन्दर्भ में अध्ययन (गुप्ता, 1992), सम्प्राप्ति के सन्दर्भ में अध्ययन (कौल, 1986; जौहरी, 2001), सृजनात्मकता के सन्दर्भ में अध्ययन (सिंह, 1988; वैशेषी, 1998), एकल एवं सहशिक्षा के सन्दर्भ में (गर्ग, 1988) तथा मूल्य, सामाजिक–आर्थिक स्थिति और संस्कृति के सन्दर्भ में अध्ययन (शर्मा, 1992) भी प्राप्त हुए है। गुप्ता (1992) ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष स्वरुप पाया कि छात्रों में छात्राओं की अपेक्षा प्रदर्शन, प्रभुत्व एवं स्वतन्त्रय की मांग अधिक प्रबल थी जबकि छात्राओं में छात्रों की अपेक्षा सानिध्य मांग अधिक प्रबल पायी गयी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्राप्त अध्ययनों के परिणाम अत्यन्त ही मिश्रित, अपर्याप्त व अस्पष्ट हैं जो कि किशोर विद्यार्थियों से सम्बन्धित प्राप्त परिणामों की स्पष्ट जानकारी नहीं प्रदान करते हैं। किशोरों से सम्बन्धित शैक्षिक योजनाओं के निर्धारण में, व्यावसायिक एवं शैक्षिक पुनर्वास में, शिक्षकों एवं माता–पिता के मार्गदर्शन के लिए किशोरों के सन्दर्भ में उनके व्यक्तित्व आवश्यकताओं से सम्बन्धित व्यापक अध्ययन की स्पष्ट आवश्यकता प्रतीत होती है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. किशोर विद्यार्थियों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं का अध्ययन करना।
2. किशोर छात्रों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं का अध्ययन करना।
3. किशोर छात्राओं की व्यक्तित्व आवश्यकताओं का अध्ययन करना।
4. किशोर छात्रों एवं छात्राओं की व्यक्तित्व आवश्यकताओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

यह परिकल्पित किया गया कि किशोर छात्रों एवं छात्राओं की व्यक्तित्व आवश्यकताओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता हैं।

अध्ययन की परिसीमाएं

अनुसंधानकर्त्री को उपलब्ध समय व संसाधनों को दृष्टिगत रखते हुये अनुसंधान के विशेष क्षेत्र को सीमित करना होता है। प्रस्तुत अनुसंधान अध्ययन निम्नांकित परिसीमाओं के अंतर्गत सम्पन्न किया गया है–

1. प्रस्तुत शोध कार्य केवल माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित केवल हिन्दी माध्यम के विद्यालयों को शोध के अध्ययन हेतु लिया गया है।
3. प्रस्तुत शोध केवल उत्तर प्रदेश तक ही सीमित है।
4. प्रस्तुत शोध केवल नियमित रूप से अध्ययनरत विद्यार्थियों पर ही किया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखते हुये वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तर प्रदेश के माध्यमिक स्तर के समस्त विद्यार्थियों को शोध की जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है।

इस अध्ययन हेतु गुच्छ न्यादर्श विधि द्वारा उत्तर प्रदेश राज्य के इलाहाबाद, लखनऊ, आगरा, कानपुर तथा वाराणसी शहर के माध्यमिक स्तर के 12 सामान्य विद्यालयों से 304 किशोर विद्यार्थियों (177 बालक एवं 127 बालिकाएं) का चयन किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण

विद्यार्थियों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं के मापन हेतु आर. आर. त्रिपाठी (1973) द्वारा निर्मित *'त्रिपाठी पर्सनल प्रीफरेन्स शिड्यूल (टी.पी.पी.एस.)* का प्रयोग किया गया है।

यह अनुसूची पन्द्रह सामान्य व्यक्तित्व चरों का बहुगुणीय मापक है, जो इस प्रकार हैं– सम्प्राप्ति, स्वीकृति, व्यवस्था, प्रदर्शन, स्वायत्ता, सानिध्य, परिहार, पराश्रय, प्रभुत्व, आत्महीनता, परोपकार, परिवर्तन, सहनशीलता, वैभिन्नता व आक्रामकता।

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ

तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या करने हेतु मध्यमान, मानक विचलन व 'टी' अनुपात की गणना की गई है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में परिकल्पित 'टी' अनुपात की सार्थकता का निर्धारण .01 स्तर पर किया गया है।

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL. -5, ISSUE-3, February-2017
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

परिणाम एवं विवेचना

1. किशोर विद्यार्थियों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं का अध्ययन।

प्रस्तुत अध्ययन का प्रथम उद्देश्य किशोर विद्यार्थियों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं का अध्ययन करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए त्रिपाठी द्वारा निर्मित 'त्रिपाठी पर्सनल प्रीफरेन्स शिड्यूल' को विद्यार्थियों पर प्रशासित किया गया। प्रस्तुत अनुसूची के अन्तर्गत व्यक्तित्व आवश्यकता के पन्द्रह चरों का मापन पृथक्–पृथक् किया गया है। प्रत्येक चरों पर विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त प्राप्ताकों के मध्यमान की गणना की गयी तत्पश्चात् मध्यमान के आधार पर उनकों श्रेणीक्रम में व्यवस्थित किया गया जो तालिका–1 द्वारा प्रदर्शित है।

तालिका–1
किशोर विद्यार्थियों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं में प्राथमिकता को दर्शाती हुयी श्रेणी–क्रम तालिका

क्र. सं.	व्यक्तित्व चर	किशोर विद्यार्थी (संख्या=304)	
		मध्यमान	श्रेणी–क्रम
1.	सम्प्राप्ति	15.86	1
2.	स्वीकृति	14.29	6
3.	व्यवस्था	14.88	4
4.	प्रदर्शन	13.16	11
5.	स्वायत्ता	12.65	13
6.	सानिध्य	15.74	2
7.	परिहार	14.10	9
8.	पराश्रय	14.69	5
9.	प्रभुत्व	14.28	7
10.	आत्महीनता	13.28	10
11.	परोपकार	15.32	3
12.	परिवर्तन	14.24	8
13.	सहनशीलता	13.03	12
14.	वैभिन्नता	12.54	14
15.	आक्रामकता	11.99	15

तालिका–1 में किशोर विद्यार्थियों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं में प्राथमिकता ज्ञात की गयी है। तालिका से स्पष्ट है कि किशोर विद्यार्थियों में सम्प्राप्ति (M=15.86), सानिध्य (M=15.74) तथा परोपकार (M=15.32) की आवश्यकतायें उच्च स्तर की पायी गयी जबकि आक्रामकता (M=11.99), वैभिन्नता (M=11.54) तथा स्वायत्ता (M=12.65) की आवश्यकतायें निम्न स्तर की पायी गयी हैं।

वहीं किशोर विद्यार्थियों में स्वीकृति ¼M=14. 29), व्यवस्था (M=14.88), प्रदर्शन (M=13.16), परिहार (M=14.10), पराश्रय (M=14.69), प्रभुत्व (M=14.28), आत्महीनता (M=13.28), परिवर्तन (M=14.24) तथा सहनशीलता (M=13.03) की व्यक्तित्व आवश्यकतायें औसत स्तर की पायी गयी है।

उपर्युक्त परिणामों को अग्रसंलग्न दण्ड आरेख–01 द्वारा भी प्रदर्शित किया गया है।

दण्ड आरेख–01

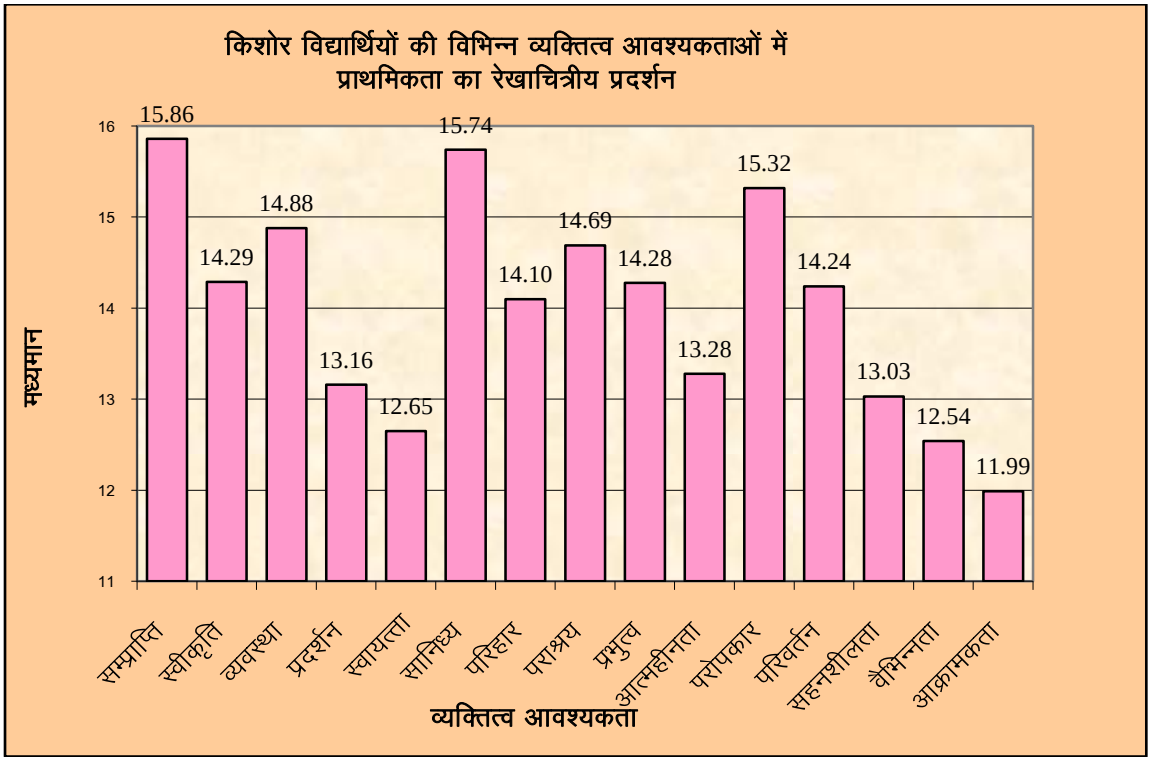

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL. -5, ISSUE-3, February-2017
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

2. किशोर छात्रों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं का अध्ययन।

तालिका – 2

किशोर छात्रों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं में प्राथमिकता को दर्शाती हुयी श्रेणी–क्रम तालिका

क्र. सं.	व्यक्तित्व चर	किशोर छात्र (संख्या=177)	
		मध्यमान	श्रेणी–क्रम
1.	सम्प्राप्ति	16.51	1
2.	स्वीकृति	13.54	9
3.	व्यवस्था	15.00	3
4.	प्रदर्शन	13.00	11
5.	स्वायत्ता	13.02	10
6.	सानिध्य	16.25	2
7.	परिहार	14.10	8
8.	पराश्रय	14.70	6
9.	प्रभुत्व	14.84	4
10.	आत्महीनता	12.60	12
11.	परोपकार	14.64	7
12.	परिवर्तन	14.73	5
13.	सहनशीलता	12.35	14
14.	वैभिन्नता	12.16	15
15.	आक्रामकता	12.56	13

तालिका–2 में किशोर छात्रों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं में प्राथमिकता ज्ञात की गयी है। तालिका से स्पष्ट है कि किशोर छात्रों में सम्प्राप्ति (M=16.51), सानिध्य (M=16.25) तथा व्यवस्था (M=15.00) की आवश्यकतायें उच्च स्तर की पायी गयी जबकि वैभिन्नता (M=12.16), सहनशीलता (M=12.35), आक्रामकता (M=12.56) तथा आत्महीनता (M=12.60) की आवश्यकतायें निम्न स्तर की पायी गयी हैं।

वहीं किशोर छात्रों में स्वीकृति (M=13.54), प्रदर्शन (M=13.00), स्वायत्ता (M=13.02), परिहार (M=14.10), पराश्रय (M=14.70), प्रभुत्व (M=14.84), परोपकार (M=14.64) तथा परिवर्तन (M=14.73) की व्यक्तित्व आवश्यकतायें औसत स्तर की पायी गयी है।

उपर्युक्त परिणामों को अग्रसंलग्न दण्ड आरेख–02 द्वारा भी प्रदर्शित किया गया है।

दण्ड आरेख–02

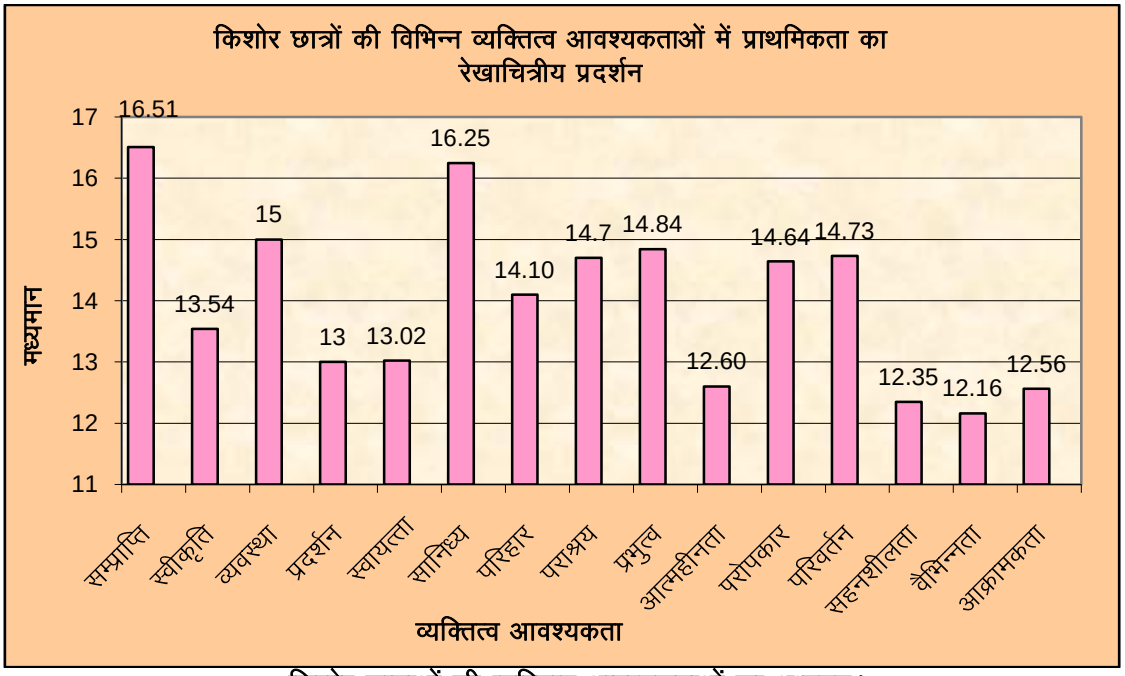

3. किशोर छात्राओं की व्यक्तित्व आवश्यकताओं का अध्ययन।

तालिका–3

किशोर छात्राओं की व्यक्तित्व आवश्यकताओं में प्राथमिकता को दर्शाती हुयी श्रेणी–क्रम तालिका

क्र. सं.	व्यक्तित्व चर	किशोर छात्राएं (संख्या=127)	
		मध्यमान	श्रेणी–क्रम
1.	सम्प्राप्ति	14.94	4
2.	स्वीकृति	15.33	2
3.	व्यवस्था	14.72	5
4.	प्रदर्शन	13.41	12
5.	स्वायत्ता	12.11	14
6.	सानिध्य	15.00	3
7.	परिहार	14.15	8

8.	पराश्रय	14.58	6
9.	प्रभुत्व	13.48	11
10.	आत्महीनता	14.23	7
11.	परोपकार	16.25	1
12.	परिवर्तन	13.55	10
13.	सहनशीलता	13.96	9
14.	वैभिन्नता	13.06	13
15.	आक्रामकता	11.21	15

तालिका–3 में किशोर छात्राओं की व्यक्तित्व आवश्यकताओं में प्राथमिकता ज्ञात की गयी है। तालिका से स्पष्ट है कि किशोर छात्राओं में परोपकार (M=16.25), स्वीकृति (M=15.33), सानिध्य (M=15.00) तथा सम्प्राप्ति (M=14.94) की आवश्यकतायें उच्च स्तर की पायी गयी जबकि आक्रामकता (M=11.21), स्वायत्ता (M=12.11) तथा वैभिन्नता (M=13.06) की आवश्यकतायें निम्न स्तर की पायी गयी हैं।

वहीं किशोर छात्राओं में व्यवस्था (M=14.72), प्रदर्शन (M=13.41), परिहार (M=14.15), पराश्रय (M=14.58), प्रभुत्व (M=13.48), आत्महीनता (M=14.23), परिवर्तन (M=13.55) तथा सहनशीलता (M=13.96) की व्यक्तित्व आवश्यकतायें औसत स्तर की पायी गयी है।

उपर्युक्त परिणामों को अग्रसंलग्न दण्ड आरेख–03 द्वारा भी प्रदर्शित किया गया है।

दण्ड आरेख–03

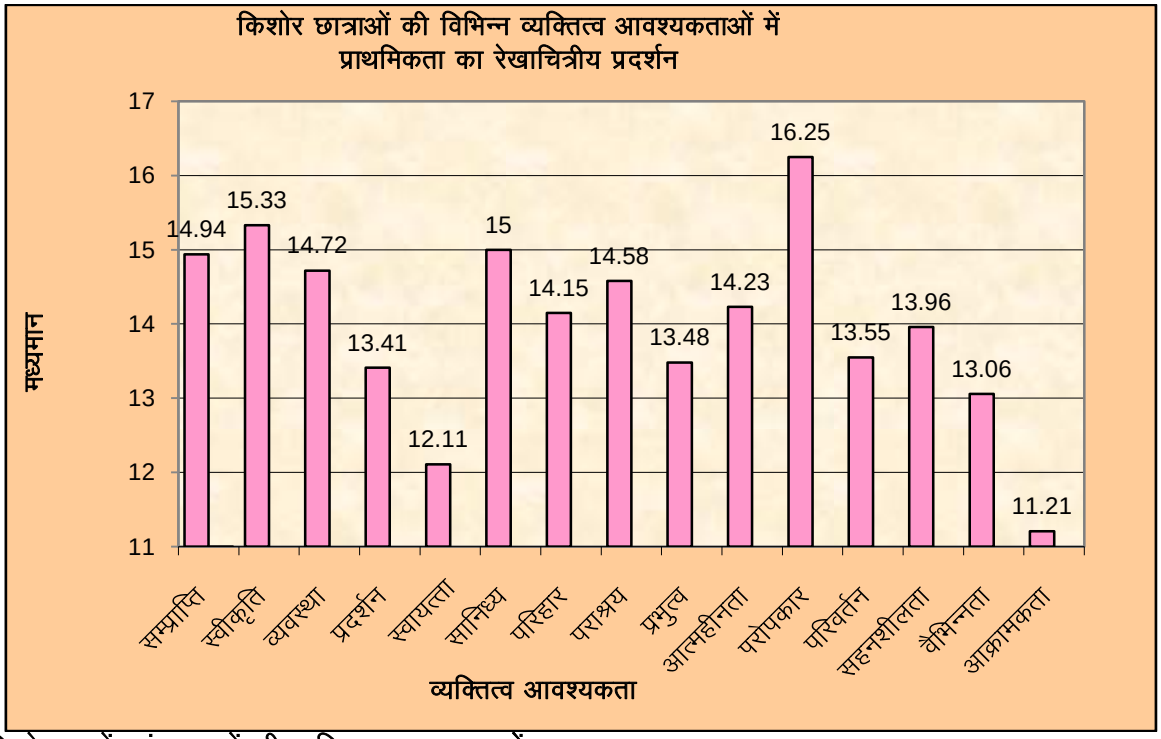

4. किशोर छात्रों एवं छात्राओं की व्यक्तित्व आवश्यकताओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

यह परिकल्पित किया गया है कि किशोर छात्रों और छात्राओं की व्यक्तित्व आवश्यकताओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका–4

किशोर छात्रों और छात्राओं की व्यक्तित्व आवश्यकताओं में तुलना को दर्शाते हुए मध्यमान, मानक–विचलन व 'टी' अनुपात

क्र. सं.	व्यक्तित्व चर	किशोर छात्र (संख्या=177)		किशोर छात्राएं (संख्या=127)		'टी' अनुपात	सार्थकता स्तर
		मध्यमान	मा0–वि0	मध्यमान	मा0–वि0		
1.	सम्प्राप्ति	16.51	2.88	14.94	3.05	4.75	.01
2.	स्वीकृति	13.54	2.88	15.33	3.04	5.42	.01
3.	व्यवस्था	15.00	2.96	14.72	2.80	0.90	असार्थक
4.	प्रदर्शन	13.00	2.68	13.41	2.74	1.36	असार्थक
5.	स्वायत्ता	13.02	2.72	12.11	3.00	2.75	.01

6.	सानिध्य	16.25	3.11	15.00	3.24	3.47	.01
7.	परिहार	14.10	3.05	14.15	3.32	0.13	असार्थक
8.	पराश्रय	14.70	3.05	14.58	2.96	0.33	असार्थक
9.	प्रभुत्व	14.84	2.79	13.48	3.02	4.12	.01
10.	आत्महीनता	12.60	3.02	14.23	3.91	3.97	.01
11.	परोपकार	14.64	3.38	16.25	3.08	4.47	.01
12.	परिवर्तन	14.73	2.91	13.55	3.32	3.47	.01
13.	सहनशीलता	12.35	2.69	13.96	2.91	5.91	.01
14.	वैभिन्नता	12.16	3.51	13.06	3.84	2.19	असार्थक
15.	आक्रामकता	12.56	2.64	11.21	2.85	4.5	.01

सार्थकता स्तर .01

तालिका–4 में दिये गये परिणाम से स्पष्ट है कि किशोर छात्रों और छात्राओं के लिए परिगणित टी का मान 4.75, 5.42, 2.75, 3.47, 4.12, 3.97, 4.47, 3.47, 5.91, व 4.5 है जो 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित सारणीमान (2.56) से अधिक है अतः 0.01 स्तर पर यह सार्थक है। अतः यह कहा जा सकता है कि किशोर छात्रों और छात्राओं में व्यक्तित्व आवश्यकतायें सम्प्राप्ति (4.75), स्वीकृति (5.42), स्वायत्तता (2.75), सानिध्य (3.47), प्रभुत्व (4.12), आत्महीनता (3.97), परोपकार (4.47), परिवर्तन (3.47), सहनशीलता (5.91) तथा आक्रामकता (4.5) में सार्थक अन्तर है। सम्प्राप्ति, स्वायत्तता, सानिध्य, प्रभुत्व, परिवर्तन तथा आक्रामकता के सन्दर्भ में किशोर छात्रों का मध्यमान किशोर छात्राओं के मध्यमान से अधिक है अतः यह कहा जा सकता है कि किशोर छात्रों में किशोर छात्राओं की तुलना में उपरोक्त आवश्यकतायें अधिक प्रबल हैं। इसके विपरीत स्वीकृति, आत्महीनता, परोपकार तथा सहनशीलता के सन्दर्भ में किशोर छात्राओं का मध्यमान किशोर छात्रों के मध्यमान अधिक हैं अतः यह कहा जा सकता है कि किशोर छात्राओं में किशोर छात्रों की तुलना में उपरोक्त आवश्यकतायें अधिक प्रबल हैं।

वहीं परिगणित टी का मान 0.90, 1.36 0.13 0.33 व 2.19 स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित सारणीमान (2.56) से कम है अतः 0.01 स्तर यह सार्थक नहीं है। अतः यह कहा जा सकता है कि व्यवस्था, प्रदर्शन, परिहार, पराश्रय तथा वैभिन्नता के सन्दर्भ में किशोर छात्रों और छात्राओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

उपर्युक्त परिणामों को अग्रसंलग्न दण्ड आरेख–04 द्वारा भी प्रदर्शित किया गया है।

दण्ड आरेख–04

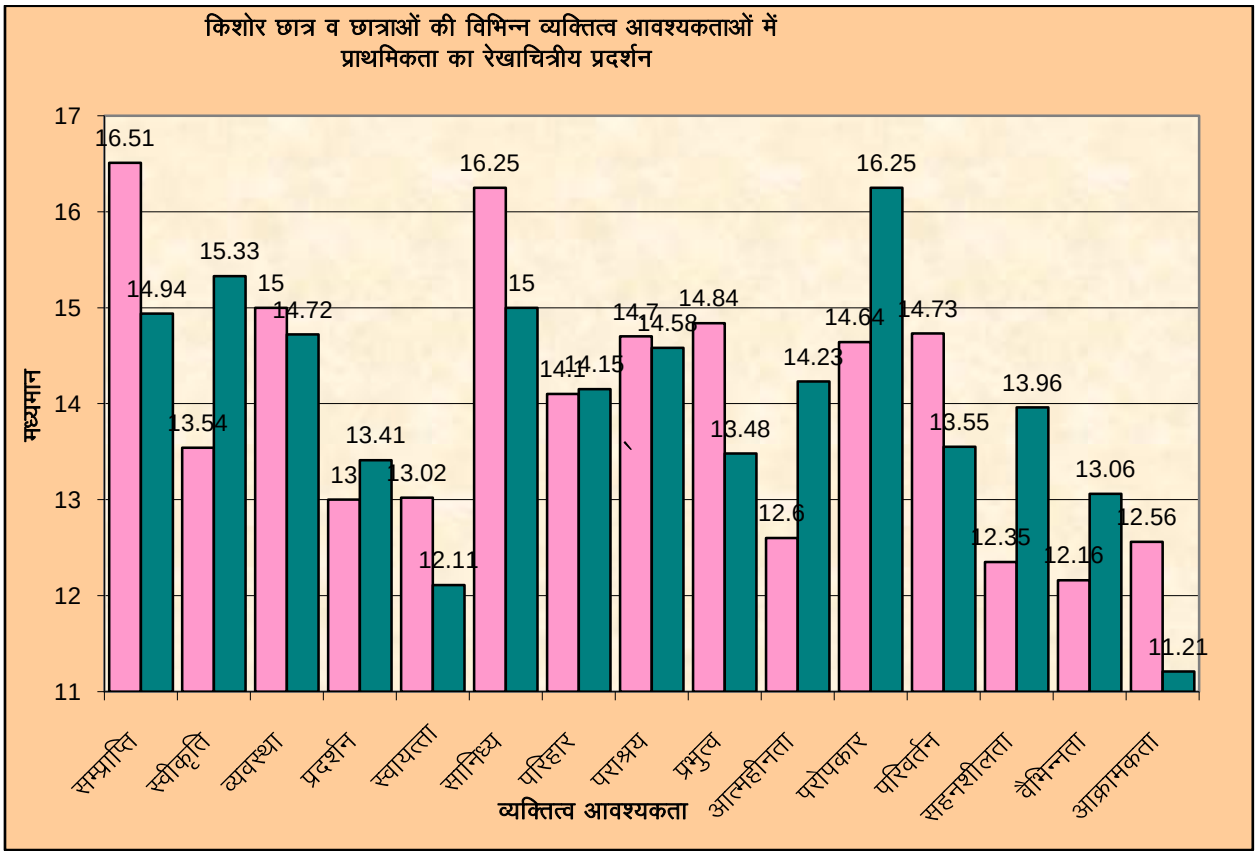

प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषणोंपरान्त यह निष्कर्ष निकलता है कि किशोर छात्रों में किशोर छात्राओं से तुलनात्मक रूप से सम्प्राप्ति, स्वायत्तता, सानिध्य, प्रभुत्व, परिवर्तन तथा आक्रामकता की आवश्यकता अधिक पाये जाने का संभावित कारण किशोर छात्राओं को छात्रों की तुलना में अधिक से अधिक घर के कामों तक सीमित रखा जाना है साथ ही, छात्रों की तुलना में इन्हें किसी भी कार्य के लिए कम योग्य मानते हुए अवसर व सुविधाएं कम उपलब्ध कराना है जिसके कारण इनमें सम्प्राप्ति की आवश्यकता कम पायी गयी। इस अध्ययन के निष्कर्ष के विपरीत अल्कालाल (1991) ने अपने अध्ययन में अंधे बालक और बालिकाओं में सम्प्राप्ति की आवश्यकता को समान रूप से पाया। वहीं सामान्य विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अध्ययन में गुप्ता (1992) ने सामान्य छात्र और छात्राओं में सम्प्राप्ति की आवश्यकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया। उप्रेती (1980) ने अपने अध्ययन में विकलांग छात्राओं में छात्रों तुलना में सम्प्राप्ति की आवश्यकता को अधिक पाया।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में आमतौर पर शुरू से ही परिवार तथा समाज द्वारा बालकों को बालिकाओं से ज्यादा स्वतन्त्रता और अवसर प्रदान किये जाते हैं जिसके फलस्वरूप बालकों में अपनी इच्छा से आने–जाने की समर्थता, जिम्मेदारियों और उत्तरदायित्वों से बचना और खुद को स्वतंत्र महसूस करने की आवश्यकता होती होगी। अध्ययन के निष्कर्ष से इस परिणाम की पुष्टि होती है। कुमार (1986) ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष स्वरूप सामान्य बालकों में स्वायत्ता की आवश्यकता अधिक पाया गया। इस अध्ययन के निष्कर्ष के विपरीत अल्कालाल (1991) ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष स्वरूप अंधे बालक और बालिकाओं की स्वायत्ता की आवश्यकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया।

बालिकाएं स्वभाव से शान्त एवं शालीन होती हैं। दूसरों को समझना, अपनी भावनाओं को काबू करना, हर चीज का शान्तिपूर्ण तरीके से समाधान करना इनके व्यवहार में होता है जबकि इसके विपरीत लड़के अधिक आवेगी, क्रोधी व आक्रामक प्रवृत्ति के होते हैं। अल्कालाल (1991) के अध्ययन के निष्कर्ष से इस परिणाम की पुष्टि होती है। अल्कालाल ने अंधे बालक और बालिकाओं में आक्रामकता की आवश्यकता में सार्थक अन्तर पाया है।

इस निष्कर्ष के विपरीत गुप्ता (1992) ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष स्वरूप बालक और बालिकाओं में आक्रामकता की आवश्यकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया।

किशोर छात्राओं में किशोर छात्रों से तुलनात्मक रूप से स्वीकृति, परोपकार व सहनशीलता की आवश्यकता अधिक पायी गयी। स्वभावतः यह देखा गया है कि बालकों की तुलना में बालिकाएं शान्त व शालीन स्वभाव की होती हैं। वे माता–पिता की आज्ञाकारी होती हैं। दूसरों के निर्देशों का पालन करना और उनकी अपेक्षा के अनुसार काम करना व दूसरों के निर्णयों को अपनाना इन्हें पसन्द आता है। पण्डित (1985) के अध्ययन के निष्कर्ष से इस परिणाम की पुष्टि होती है। पण्डित ने अपने अध्ययन में छात्र एवं छात्राओं में स्वीकृति की आवश्यकता में अन्तर पाया।

बालकों की तुलना में बालिकाओं में प्राकृतिक तौर पर ही परोपकारिता व सहनशीलता के गुण देखे जा सकते हैं। बालिकाएं बालकों की तुलना में मार्मिक हृदय वाली होती हैं। कठिनाइयों में दूसरों की मदद करना, दूसरों से सहानुभूति और दयापूर्ण व्यवहार करना, दूसरों का सहयोग करना इन्हें अच्छा लगता है। अल्कालाल (1991) के अध्ययन के निष्कर्ष से इस परिणाम की पुष्टि होती है। अल्कालाल ने अपने अध्ययन में अंधे बालक और बालिकाओं की आवश्यकता में अन्तर पाया जबकि इस निष्कर्ष के विपरीत पण्डित (1985) और गुप्ता (1992) ने सामान्य बालक और बालिकाओं की परोपकार की आवश्यकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया। पण्डित (1985) ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष स्वरूप सामान्य बालक और बालिकाओं में सहनशीलता में सार्थक अन्तर पाया। इसके विपरीत अल्कालाल (1991) ने अपने अध्ययन में अंधे बालक और बालिकाओं में सहनशीलता की आवश्यकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया। पण्डित (1985) और गुप्ता (1992) ने सामान्य बालक और बालिकाओं की परोपकार की आवश्यकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया।

किशोर छात्राओं में किशोर छात्रों से तुलनात्मक रूप से आत्महीनता की आवश्यकता अधिक पायी गयी। किशोर छात्राओं में आत्मविश्वास की कमी का होना हो सकता है जिस कारण ये अपने आप को आत्महीनता की भावना से बाहर नहीं निकाल पाती होंगी और इसी आत्मविश्वास की कमी व आत्महीनता की भावना की वजह से ये अपनी एक अलग पहचान नहीं बना पाती होंगी। किसी समूह का नेतृत्व करना, दूसरों को निर्देशित करना व दूसरों को आज्ञा देने में ये अपने आप को असमर्थ पाती होंगी।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं–

किशोर विद्यार्थियों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं से सम्बन्धित निष्कर्ष

1. किशोर विद्यार्थियों में सम्प्राप्ति, सानिध्य तथा परोपकार की आवश्यकतायें उच्च स्तर की पायी गयी है।
2. किशोर विद्यार्थियों में आक्रामकता, वैभिन्नता तथा स्वायत्ता की आवश्यकतायें निम्न स्तर की पायी गयी है।
3. किशोर विद्यार्थियों में स्वीकृति, व्यवस्था, प्रदर्शन, परिहार, पराश्रय, प्रभुत्व, आत्महीनता, परिवर्तन तथा सहनशीलता की व्यक्तित्व आवश्यकतायें औसत स्तर की पायी गयी है।

किशोर छात्रों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं से सम्बन्धित निष्कर्ष

1. किशोर छात्रों में सम्प्राप्ति, सानिध्य तथा व्यवस्था की आवश्यकतायें उच्च स्तर की पायी गयी है।
2. किशोर छात्रों में वैभिन्नता, सहनशीलता, आक्रामकता तथा आत्महीनता की आवश्यकतायें निम्न स्तर की पायी गयी हैं।

3. किशोर छात्रों में स्वीकृति, प्रदर्शन, स्वायत्ता, परिहार, पराश्रय, प्रभुत्व, परोपकार तथा परिवर्तन की व्यक्तित्व आवश्यकतायें औसत स्तर की पायी गयी है।

किशोर छात्राओं की व्यक्तित्व आवश्यकताओं से सम्बन्धित निष्कर्ष

1. किशोर छात्राओं में परोपकार, स्वीकृति, सानिध्य तथा सम्प्राप्ति की आवश्यकतायें उच्च स्तर की पायी गयी है।
2. किशोर छात्राओं में आक्रामकता, स्वायत्ता तथा वैभिन्नता की आवश्यकतायें निम्न स्तर की पायी गयी हैं।
3. किशोर छात्राओं में व्यवस्था, प्रदर्शन, परिहार, पराश्रय, प्रभुत्व, आत्महीनता, परिवर्तन तथा सहनशीलता की व्यक्तित्व आवश्यकतायें औसत स्तर की पायी गयी है।

किशोर छात्रों एवं छात्राओं की व्यक्तित्व आवश्यकताओं के तुलनात्मक अध्ययन से सम्बन्धित निष्कर्ष

1. किशोर छात्रों और छात्राओं की व्यक्तित्व आवश्यकताओं में सम्प्राप्ति, स्वीकृति, स्वायत्तता, सानिध्य, प्रभुत्व, आत्महीनता, परोपकार, परिवर्तन, सहनशीलता तथा आक्रामकता में सार्थक अन्तर है।
2. किशोर छात्रों और छात्राओं की व्यक्तित्व आवश्यकताओं में व्यवस्था, प्रदर्शन, परिहार, पराश्रय तथा वैभिन्नता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *कुमार, एस. 1985; ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ द इन्ट्रेस्ट, नीड्स एण्ड एडजेस्टमेन्ट प्रॉब्लम्स ऑफ गिफ्टेड एण्ड ऐवरेज चिल्ड्रेन. पीएच. डी., एजुकेशन, दिल्ली यूनिवर्सिटी.*
2. *कौल, एल. 1986; पर्सनालिटी नीड्स ऑफ हाई एण्ड लो अचीवमेन्टस् इन मैथमैटिक्सः प्रोजेक्ट ऑफ हिमाचल प्रदेश यूनिवर्सिटी 1978. साइटेड इन द थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन. 671.*
3. *कैमिरॉन, एन. (1947). दी साइकोलॉजी ऑफ बिहेवियर डिसऑर्डर. कैम्ब्रिज : रीवरसाइड प्रेस.*
4. *गर्ग, अल्का 1988; ए स्टडी ऑफ पर्सनालिटी नीड्स, सेल्फ–कॉन्सेप्ट एण्ड रिस्क–टेकिंग विथ अ स्पेशल रिफ्रेन्श टू सोशियो–इकोनॉमिक स्टेट्स अमंग सिंगल सेक्स कॉलेज गर्ल्स. पीएच. डी., आगरा यूनिवर्सिटी.*
5. *गुप्ता, अल्का 1992; ए स्टडी ऑफ द स्टूडेन्ट्स, एकेडमिक सैटिस्फैक्शन एस रिलेटेड टू देयर पर्सनालिटी नीड्स एण्ड पर्सनल वैल्यूज. पीएच. डी. एजुकेशन, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी.*
6. *गैरहॉक, आर. के. 1973; एन इन्वेस्टीगेशन इन टू द पर्सनालिटी कैरेक्टरस्टिक्स ऑफ ऑरफनस्. पीएच. डी., साइको., आगरा यूनिवर्सिटी.*
7. *गोल्डस्टिन, के. (1939). दी ऑर्गेनिज्म. न्यूयार्क : अमेरिकन बुक.*
8. *जौहरी, मंजू 2001; ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ पर्सनालिटी नीड्स, रिस्क–टेकिंग बिहेवियर एण्ड प्रॉब्लम सॉल्विंग एबेल्टी इन रिलेशन टू स्कॉलिस्टिक परफॉमेंन्स ऑफ गर्ल्स स्टूडेन्ट्स. पीएच. डी.एजूकेशन, हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद.*
9. *नकवी, टी. 1982; इकोनॉमिक स्ट्रेटस एण्ड ऐज एस कोरिलेट्स ऑफ सरटेन पर्सनॉलिटी मोड्सः ए क्रॉस–कल्चरल स्टडी. पीएच. डी. साइको., आगरा यूनिवर्सिटी.*
10. *पाटिल, आई. 1982; साइकोलॉजिकल स्टडी ऑफ इन्टैलिक्चूअल सुपिरियर. पीएच. डी. साइको., कर्नाटक यूनिवर्सिटी.*
11. *प्रिंगल, एम. के. (1974). द नीड ऑफ चिल्ड्रेन. हटचिन्सन.*
12. *फ्रूड, एस. (1939). ऐब्रिस डेयर साइकोएनालाइस. फ्रेंकफर्ट : फिशर टाश्चेनबक वरलैग*
13. *फ्रैन्कल, वी. ई. (1984). होमो पेसन्ट. वर्सजावा : पी ए एक्स.*
14. *मॉसलो, ए. एच. (1954). मोटिवेशन एण्ड पर्सनैलिटी. न्यूयार्क : हार्पर एण्ड रॉ पब्लिशर.*
15. *मुर्रे, एच. ए. (1938). एक्सप्लोरेशन इन पर्सनैलिटी. न्यूयार्क : ऑक्सफोर्ड यूनिर्वसिटी प्रेस.*
16. *मैककिनॉन, डी. (1948). मोटीवेशन. इन ई.वी. बोरिंग (एडी.) फाउंडेशन ऑफ साइकोलॉजी. न्यूयार्क : जे. विली.*
17. *मो. शाहजहॉ 1982; ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ द नीड–पैटर्न्स ऑफ यूनिवर्सिटी स्टूडेन्ट्स ऑफ इण्डियन एण्ड बांग्लादेश. पीएच. डी. साइको., बी. एच. यू.*
18. *वैषेशी, आर. 1985; कॉग्नेटिव स्टाइल, नीडस एण्ड वैल्यूज ऑफ हाई एण्ड लो क्रियेटिव अडोलसेन्टस. पीएच. डी. एजुकेशन, पंजाब यूनिवर्सिटी.*
19. *शर्मा, मंजूलता 1992; वैल्यू ओरियन्टेशन, सोशियो–इकोनॉमिक स्टेटस एण्ड कल्चर इन रिलेशन टू पर्सनालिटी नीडस. पीएच. डी. साइको., आगरा यूनिवर्सिटी.*
20. *शेख, गुलाम कादिर 1995; ए स्टडी ऑफ पर्सनालिटी ट्रेटस, साइकोजनिक नीडस एण्ड एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ रुरल एण्ड अर्बन फिमेल अडोलसेन्ट स्टूडेन्टस इन रिलेशन टू देयर काग्नेटिव स्टाइल. इण्डियन एजुकेशनल रिव्यू, 30 (2).*
21. *शॉ, बी. (2007). एन इन्ट्रोडक्शन टू सोशल पॉलिसीः http:www2.rgu.ac.uk/publicpolicy/introduction/need.htm*
22. *सिंह, कौशल पाल 1988; ए स्टडी ऑफ क्रियेटिविटी इन रिलेशन टू अचीवमैन्ट मोटिवेशन, पर्सनालिटी नीडस एण्ड सिक्योरिटी–इन सिक्योरिटी ऑफ सेकेण्ड्री स्कूडेन्ट ऑफ रुरल एरिया ऑफ राजस्थान. पीएच. डी. एजुकेशन., आगरा यूनिवर्सिटी.*
23. *स्वरुप, स्मृति 1975; एटीटयूड, वैल्यू, नीडस एण्ड लेवल ऑफ एसपिरेशन ऑफ टीचरस एण्ड प्यूपिल्स. पीएच. डी. एजुकेशन., इलाहाबाद यूनिवर्सिटी, इलाहाबाद.*
24. *श्रीवास्तव, आर. के. 1988; ए स्टडी ऑफ नीडस इन रिलेशन टू क्रियेटिविटी अमंग हाई स्कूल प्यूपिल्स. हेमवती नन्दन बहुगुणा गढवाल यूनिवर्सिटी.*